

मनु भंडारी की कहानियों में स्त्री संसार

सिन्धु ए.

Associate professor

Dept of Hindi Payyanur College Payyanur
Edat (PO)Kannur, Kerala ,670741Ph 9497801289

“मिथक के उद्भव के बारे में वैसा प्रमाण तो नहीं है। फिर भी आशिक तौर पर परंपरा के साथ रहनेवाला, साथी खुदरती प्रतिभासों, विश्वासों की व्याख्या करनेवाला लेकिन यथार्थ घटनाओं से प्रकट संबंध व्यक्त करने वाला है।” यह एंथ्रोपोलॉजी, मनोविज्ञान आदि कई क्षेत्रों से संबंध रखने वाली संज्ञा है। लोक कथाएं और मिथक को अलग करते हुए और नेरत्रोपेतेंफ्रे का कहना है कि “मिथक यथार्थ में खटित ही है।” (The new encyclopaedia of Britannica, 420) जिंदगी की अवस्थाओं की व्याख्या करते समय मिथक को अलग नहीं रख सकते।

संसार में निगूढ रहस्यों और अद्भुत प्रतिभासों से भरा पड़ा है। पृथ्वी का उद्भव, मौसम का परिवर्तन, बारिश, बिजली, सूर्य, चंद्र इन सब का रहस्य मानव के लिए हमेशा खोज का विषय रहा था। मानव में प्रकृति की संहार शक्तियों को पार करने का अरमान है। मिथक इस अरमान की पूर्ति के लिए मनुष्य द्वारा निर्मित कल्पित कथा है। मनुष्य ने अपनी इच्छाओं की पूर्ति कल्पित कहानियों से की। ये कथाएं अपने से भी सशक्त मानवी पत्रों के सृष्टि द्वारा की गई है। इसीलिए इन कहानियों की पृष्ठभूमि भी अभौमिक हो सकती है। इस प्रकार में निगूढताओं से भरे संसार के संबंध में मानव द्वारा गठित कहानियों को ही मिथक कहते हैं। मिथक से सामान्यतः ऐसी काल्पनिक कथाओं का अर्थ लगाया जाता है, जो अलौकिक तथा अद्भुत होती है। सदियों से कानों से कानों में कही गई गाथाएं, गाकर सुनें गये गीत, मन में रूढ़ हुए विश्वास और संकल्पनाएं, आदत बने रीति रिवाज, जीवन रीतियां इत्यादि मिलकर अद्भुत परंपरागत संपत्ति को मिथक कह सकते हैं।

मिथक अलौकिक होने पर भी मानव जीवन से निकट संबंध रखता है। मानव जाति के उत्पत्तिकाल से ही मिथकों की सृष्टि शुरू हुई है और आज भी हो रहे हैं। यह आदिम मानव द्वारा जिज्ञासा वृत्ति की परितृप्ति के लिए की कयी अभिव्यक्ति मात्र नहीं बल्कि मिथकों की जड़ें मानव स्वभाव की अथल गहराइयों में भी विद्यमान है। “जहां-जहां मानव के ज्ञान में कमियां हैं उसे दूर करने के लिए शब्दों और प्रतीकों से मिथक का सृजन किया जाता है। प्रकृति से अपरिचित वस्तुओं का सृजन नहीं किया जाता है। बल्कि घटित, घटने की संभावना रखनेवाली योग्य व कल्पना करने योग्य चीजों का होता है। ये सभ मिथक के अन्तर्गत आते हैं।” (Sahityalokam, 113) अर्थात् मिथक केवल अव्यवस्थित और भ्रमपूर्वक विचारों का समूह मात्र नहीं वरन यह प्रत्यक्ष ज्ञान की निश्चित रीति पर आधारित होता है।

ग्रीक शब्द मिथोस से ही मिथक की उत्पत्ति हुई है। इसका पुराना अर्थ था मुख से उच्चारित वाणी। कथाएं तो मुख से उच्चारित होती है। लेकिन कालांतर में अन्य शब्दों के समान मिथक शब्द में भी अर्थ में बदलाव आ गया। ये एसी काल्पनिक कथाएं बन गई जिन्हें वैज्ञानिक तथा ऐतिहासिक दृष्टि से प्रमाणित नहीं किया जा सकता।

मिथक का अध्ययन स्वाभाविक तौर पर प्रागबिम्बों की तलाश में पहुंचता है। सदियों से मनुष्य की अबोध चेतना में रूढ़ हुए संकल्पना और अनुभूतियों को ही युग ने प्रागबिम्ब पुकारा। प्रागबिम्ब स्वतः अज्ञात है किंतु सार्वजनिक भाव रूप है, जो समस्त नैसर्गिक मानसिक शक्तियों को शासित रखते है। चेतन मन का कोई नियंत्रण इन पर नहीं होता अर्थात् चेतन के व्यवहार से अचेतन मन का व्यापार

बिल्कुल भिन्न है। “मिथक प्रपंच और जीवन के संबंध में प्रागैतिहासिक मनुष्य के प्रागबिम्बीय चिंतन का सफल है। प्रागबिम्बीय होने के कारण यह सत्य व्यक्ति के स्तर पर ही सीमित नहीं रहा उन्हें वह समग्र समाज की संपत्ति बनता है। मिथक कोई झूठी कल्पना नहीं प्रत्युत वह प्रागबिम्बों से नियंत्रित एवं नियमित होकर अबोध पूर्वक संपन्न होने वाले व्यापार का परिणाम है।” अज्ञेय काव्य में प्रागबिम्ब और मिथक, 63)

मिथक और इतिहास- मिथक एक तरह की कल्पित कथा है जिसे प्रमाण, स्थल व कल का बंधन ही नहीं है। लेकिन अतीत में घटित घटनाओं का आकलन है जो स्थान और समय के बंधन से मुक्त नहीं है। इतिहास अतीत के यथार्थ का लेखा जोखा है। लेकिन मिथक परिनिष्ठित नहीं है। उसके भीतर कई परिकल्पनाएं समाहित है। जैसे तो लोग मिथक माने पावन इतिहास कहते हैं। कभी-कभी इतिहास में मिथोलजी और मिथोलजी में इतिहास का मिश्रण भी होता है। एक समय ऐसा भी था मिथक और इतिहास को अलग नहीं माना गया था। “जो मिथक नहीं वही इतिहास है। इतिहास का कहना सत्य न हो तो वह गलत इतिहास है। मिथक का कहना सच हो या झूठ शायद इतिहास बन जाता है।” (9The use of Greek mythology, 5) मिथक और इतिहास अलग-अलग होने पर भी अनेक मिथकों का स्रोत ऐतिहासिक घटनाओं में से स्पष्ट ही प्राप्त होता है। वह इसीलिए की कालांतर में मानव इतिहास को विकृत कर ऐतिहासिक पात्र को मिथकीय बनालिया और ऐतिहासिक नायक मिथकीय नायक बन जाता है। लेकिन यह कथापि ठीक नहीं है कि मिथक इतिहास से उत्पन्न है। मिथकीय सत्य तथा ऐतिहासिक सत्य में मूलभूत अंतर होता है। मिथकीय सत्य अनुष्ठानों से गुंथा हुआ है, ऐतिहासिक सत्य का संबंध तथ्यों से होता है। इन इन तत्वों का उद्घाटन करने पर सत्य की प्राप्ति संभव हो सकेगी।

लोककथा परिकथा और मिथक

घटीकथा, लोककथा और परिकथाएं मिथक के अंतर्गत मानी जाती है। आपसी संबन्ध रखने पर भी ये सब अलग अलग बै। मिथक के निर्माण में ऐतिहासिकता का भी योगदान है, फिर भी भावनाओं से भरी दास्ताएं हैं लेकिन इसमें इतिहास सत्य शामिल है। अतिहासिक सत्य में संदेश ओवं भावनाएं भरकर एत्यों का रूपायन हुआ। इसप्रकार की कहानियों में पाए जानेवाले इतिहास सत्य ऐतिहासिकता को प्रामाणिकता देते है।

मिथक और लोककथों में अनेक समान तत्व पाए जाते है। मिथक और लोककथाओं में देवताओं की कहानियाँ मिलती है फिर भी यह आवश्यक नहीं कि मिथक लोककथा हो और लोककथा मिथक हो। मिथक में देवताओं का प्रयोग धार्मिक आस्थाओं से होता है। इसका संबन्ध आदिम मानस से है, जब कि लोक कथाएं अपेक्षाकृत विकसित स्थिति का द्योधक है। अधिकांश लोककथाओं का विकास मिथकों से हुआ है। परिकथाएं मात्र काल्पनिक कथा है जिसका कोई धार्मिक सामाजिक अथवा नैतिक उद्देश्य नहीं। मानव मन की व्यक्तिगत आकांक्षाएं, उसके मन की मौज इन कथाओं के माध्यम से अभिव्यक्त होती है। कथात्मकता प्रतीकात्मकता के कारण मिथक तथा परिकथाओं में रूप की समानता है। इस तरह मिथक इन सब से संबन्ध रखते है। फिर

भी ये सब एक नहीं। मिथक कोई झूठी कल्पना नहीं, वह मानवराशी के महानतम सत्य की अभिव्यक्ति है। मिथक सामूहिक अचेतन की उपज है। इससे समाज की आवश्यकताएं, इच्छाएं नैतिक, सामाजिक आदर्श अर्थात् उनके जीवन की संपूर्ण वास्तविकताएं प्रतिबिंबित होती हैं। यह वैज्ञानिक अभिरुचि की परिपूर्णता के लिए की गई व्याख्या नहीं है बल्कि आदिम वास्तविकताओं का कथात्मक पुनरुत्थान है। यह जीवन में गहरी धार्मिक मांग की संतुष्टि के लिए कहे गए कथाएं हैं। नैतिक अभिलाष सामाजिक

विनम्रता यहां तक की व्यवहारिक आवश्यकताओं की पूर्ति मिथक करता है। मिलनोस्की का मिथक संबंधी दृष्टिकोण को मलती सिंह रेखांकित करती है- “मिथक आदिम समाज में एक अपरिहार्य आवश्यकताओं की पूर्ति करता है- यह विश्वासों की अभिव्यक्ति करता है, बढ़ावा देता है, कूटबद्ध वह नैतिकता को प्रोत्साहित करता है, अनुष्ठानों की कुशलता या निपुणता के लिए साक्ष्य होता है तथा मनुष्य के दिशा निर्देशन के लिए व्यावहारिक नियमों को धारण करता है, इस प्रकार मिथक मानवीय सभ्यता का बहुत बड़ा उपादान है। यह एक बौद्धिक व्याख्या या कलात्मक कल्पना नहीं है बल्कि आदिम विश्वास एवं नैतिक ज्ञान का घोषणा पत्र है। मूल निवासियों के लिए यह कथाएं प्रचीनों के कथन मात्र हैं। आधिक महान तथा सुसंगत वास्तविकता है। उसके द्वारा आधुनिक मत का जीवन भाग्य तथा कार्य निर्धारित होता है, जिसका ज्ञान मनुष्य को नैतिक आचरण की प्रेरणा से परिपूर्ण करता है।” (मिथक एक अनुशीलन, 28) जिस जनसमूह में मिथक को पूर्ण विश्वसनीयता प्राप्त होती है, जिसमें वह प्रचलित रहता है। इतिहास इसे सत्य माने या ना माने मिथक की शक्ति और अर्थवत्ता सब कुछ इस विश्वास के बल पर ही है।

मिथक एक समाज का नितांत सपना है। एक जन समाज के अरमानों मूल्यों की मूल्य प्रतीकात्मक सपना है मिथक। “मिथक अर्थ और संरचना से स्वप्न के समान है। सपने से व्यक्ति के मन में रूपायित होनेवाले स्वानुभवों की समस्या की पूर्ति होता है तो एक समूह के सपनों की पूर्ति मिथकों के जरिए हो जाते हैं।” (मित्तम समूहवुम-प्रस्तावना) स्वप्न का अपना अस्तित्व होता है, उसी प्रकार मिथक का भी। स्वप्न पर हम सवाल नहीं उठाते, इसी प्रकार मिथक पर भी। संघर्षों से मन को मुक्त कराने और सुकन दिलाने की शक्ति स्वप्न में विद्यमान है। यही शक्ति मिथक में भी विद्यमान है। मिथक समाज द्वारा स्वीकृत सपना है।

मिथक समाज पर गहरा असर डालता है। वह हमेशा अपने अतीत की संस्कृति और विरासत से संबंध रखता है। यह मानव के चेतना पर ही नहीं अचेतन स्तर पर भी असर डालते हैं। यह एक जटिल सांस्कृतिक सत्य है। “परंपरा द्वारा स्वीकृत तथा संस्कृति द्वारा व्याख्यायित कहानी या पात्र ही मिथक है। (स्त्री रचना दर्शनम और अवलोकनम, 50-51) संस्कृति में रूढ होने के कारण मिथक के अस्तित्व पर कोई भी प्रश्न नहीं उठाते।

साहित्य में मिथक का सन्निवेश कई रूपों और मयनों में हुआ है। अतीत के उपकरण सदैव रचना के संप्रेषण शक्ति को बढ़ा देती है। क्योंकि अतीत के प्रति मनुष्य मन में एक तरह का आत्मीय संबंध बना रहता है। सत्यता की प्रतीती होती है, साथ ही अपनेपन का भी। रचनाकार इतिहास के पात्रों व घटनाओं को उसके बंधनों से मुक्त करके मिथकीय बना देता है। रचनाकार इतिहास की अपेक्षा अधिक स्वतंत्रता यहाँ अनुभव करता है। ये मिथक सामूहिक संवेगों तथा संवेदनाओं को संवहन करने की क्षमता रखते हैं। यही क्षमता मिथक को साहित्य से जोड़ती है।

मिथक और साहित्य- मिथक एवं साहित्य तत्त्वतः एक है। मिथकों में भावात्मकता कल्पनाशीलता, प्रतीकात्मकता, चित्रात्मकता एवं रहस्यानुभूति जैसे अनेक ऐसे तत्व हैं जो उन्हें साहित्य के अत्यंत निकट पहुंचा देते हैं। “अनेक मिथकीय अध्येताओं ने मिथक को आदिम कविता कहा है।” (मिथक एक अनुशीलन, 54) मिथक तथा साहित्य का संबंध प्राचीन काल से है। होमर के समय से ही मिथक साहित्य में

आने लगे थे। हर साहित्यकार अपने समय के सीमित दायरे में रहना नहीं चाहता। इसीलिए वह समय उल्लंघन करने का प्रयास करता है। वह अतीत में जाकर अतीत को वर्तमान से जोड़ने का प्रयत्न करता है। यह वापस साहित्य के मिथकों में आकर रुकती है। मिथक अर्थ संपन्न है। उसको साहित्य से अलग करने पर अर्थ अधूरा रह जाएगा। यानी अर्थ संपन्न मिथक साहित्य में आने पर ही पूर्णता पता है। कल्पित कथाएं, मिथक और कहानियों आदि स्वतः साहित्य नहीं है। ये सब साहित्य के लिए उपयोगी उपजीव्य है।

साहित्य से मिथक को पृथक नहीं कर सकते। अलग-अलग देश के अलग-अलग मिथक होते हैं। किसी भी देश का साहित्य उस देश के मिथकों को अछूता नहीं छोड़ सकता। कहने का तात्पर्य यह है मिथक संपूर्ण मानव जाति का प्राचीनतम एवं श्रेष्ठतम धरोहर है। साहित्य में ही तो हमारी संस्कृति ही द्योतित होती है। जब साहित्य में मिथक आ जाता है तो पूर्ण रूप से हमारी संस्कृति ही विकास पाती है। भारत का अपना अलग मिथक है। भारतीय मिथकों को साहित्य से अलग नहीं कर सकते। मिथकों को अलग करने पर साहित्य का कोई अस्तित्व हो नहीं रह जाता। भारत के पुराण और ऐतिहासिक रचनाएं मिथकों का भंडार हैं। इस भंडार में समाहित मिथकों को लेकर भारतीय साहित्यकारों ने अनेक रचनाएं की और आज भी कर रहे हैं। वेदो, ब्राह्मण, उपनिषद, पुराण तथा महाभारत की कथाएं साहित्य का उपजीव्य ही नहीं है, वरन साहित्य का अंग भी है।

पुराण और ऐतिहासिक रचनाओं में से मिथक को लेकर साहित्यकार रचनाएं करते हैं। साहित्यकार अपनी रचनाओं में मिथक को उसी रूप में लेते हैं और प्रतीकात्मक रूप में भी। मिथक में प्रतीकात्मकता की शक्ति सन्निहित है। मिथक व्यक्ति और समाज के अनुभव, विश्वास, आस्था और समाज के उच्चतम सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतीकात्मक रूप में अभिव्यक्ति देने का मात्र भावात्मक माध्यम है। मिथकों के माध्यम से मानव ने साहित्य सृजन का संस्कार अर्जित किया है। साहित्यकार मिथक का प्रयोग अपनी रचनाओं के अनुसार करते हैं। साहित्यकार इसको पुरातन मौखिक कथाओं के रूप में लेखबद्ध करता है और अपनी इच्छा के (विषय) अनुसार या लक्ष्य के अनुसार इनका प्रयोग करते हैं। यहाँ घटनाओं की सत्यता से कोई सरोकार नहीं बल्कि कलात्मक अभिव्यक्ति को ही प्रमुखता दिया जाता है। मिथक मानव मस्तिष्क के बौद्धिक विचारों को नहीं अपितु मानव मन की भावनाओं को अभिव्यक्ति देने में सफल रहा है। इसलिए मिथक के द्वारा अभिव्यक्त विषय समाज मन पर प्रभाव डालता है।

लचीलापन मिथक की विशेषता है। इसलिए मिथक को प्रत्येक युग की वास्तविकता को अभिव्यक्ति देने के लिए नए संदर्भों में प्रस्तुत किया जाता है। मिथकों का पुनर्निर्माण और पुनर्व्याख्या साहित्यकार कर रहे हैं। संस्कृति द्वारा पीढ़ियों को प्राप्त होने के कारण युक्ति के परे समाज मन में इसका अस्तित्व बना रहता है। इसलिए मिथकीय पात्रों का असर समाज में अधिक होता है। पुनःनिर्मित मिथक कल समाज द्वारा स्वीकृत किया जाएगा और कल का मिथक बन जाएगा। मिथक की इसी क्षमता को साहित्यकार अपनाते हैं। आज बहुत से पुनःव्याख्यत मिथक साहित्य में मिलते हैं खासकर स्त्रीवादी साहित्य, दलित साहित्य आदिवासी साहित्यों में। हाशिएकृतों के अस्तित्व की स्थापना के लिए समाज में रूढमूल मिथकों का विमिथकीकरण को नए साहित्यकार कर रहे हैं।

संदर्भ :-

1. मालती सिन्हा, 1988, मिथक एक अनुशीलन, लोकभारती प्रकाशन, इलहबाद।
2. सि.एस राजन, 1992, अज्ञेय काव्य में प्रागबिम्ब और मिथक, लोकभारती प्रकाशन, इलहबाद।
3. राघव वारियर, 1998, मित्तम समूहवुम, जालकम पब्लिकेशन, कोषिककोडा (मलयालम)
4. प्रशान्त कुमार एन, 1998, स्त्री रचना दर्शनम और अवलोकनम, नेशनल बुकस्टाल, कोट्टयम मलयालम)
5. Dowdem Ke, 1992, The new encyclopaedia of Britannica, Routledge, London
6. Sahityalokam, 2009, सितंबर-अक्तूबर।